भारतीय विद्यालय डारसेट
हिंदी विभाग

पाठ: मनुष्यता	कायपत्रिका का तिथि: ----------	
संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टीफन	तिथि:----------	
विद्यार्थी का नाम :----------	कक्षा : X ब	
	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।	
प्र. (1)	कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?	
उ.	कवि ने यशस्वी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है। जिस मृत्यु को सभी याद कर, जो परोपकार के कारण सम्माननीय हो, वह सुमृत्यु है।	
प्र. (2)	उदार व्यक्ति का पहचान कैसे हो सकती है?	2
उ.	उदार व्यक्ति का पहचान यह है कि वह इस असीम संसार को अखंड रूप से अपना मानता है। वह जाति, देश या रंग का भेद किए बिना सबको आत्मीय मानता है।	
प्र. (3)	कवि ने दधीचि, कण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है?	5
उ.	कवि ने दधीचि, कम आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर सारी मनुष्यता को त्याग और बलिदान का संदेश दिया है। दधीचि ने देवताओं को रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ तक दान म दे दी थीं। कण ने ब्राह्मण के माँगने पर अपना जन्मजात स्वण-कवच तक दान म दे दिया था। उशीनर ने कबूतर के बदले अपने शरीर का माँस दे दिया था। रंतिदेव ने भूखे अतिथियों के लिए अपने हिस्से का भोजन उन्ह दे दिया था। इस प्रकार यो महापुरुष हम आत्म-त्याग और मानव-सेवा का पाठ पढ़ाते ह।	
प्र. (4)	मनुष्य मात्र बंधु है---- से आप क्या समझते ह? स्पष्ट कीजिए।	2
उ.	इसका अथ है – संसार के सभी मनुष्य हमारे बंधु ह, भ्रातवत् ह। विश्व का कोई भी प्राणी हमारे लिए पराया, बेगाना, विजातीय या शत्रु नहीं है।	
प्र. (5)	कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?	
उ.	कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा दी है क्योंकि सभी प्राणी मूलतः एक ह। वे एक ही पिता की संतान ह। पूरी मानवता एक है। दूसरे, मनुष्य का धम है कि वह दूसरों को भी उठाने, बढ़ाने और तराने के काम आए।	
प्र. (6)	व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए ? इस कविता के आधार पर लिखिए।	5
उ.	यह कविता हम संदेश देती है कि हम दूसरों के काम आना चाहिए। हम स्वाथ को तिलांजलि देकर पूरी मानव-जाति के लिए जीना चाहिए। हम पूरे संसार को अपना बंधु मानना चाहिए। हम जहाँ भी दुख-दद देख, वहाँ करुणा, दया और परोपकार का व्यवहार कर। हम धन का घमंड न कर। भूल कर भी मानव-मानव म अलगाव पैदा न कर। जहाँ तक हो सक, हम सभी म मेलजोल बढ़ाने का प्रयत्न कर।	
प्र. (7)	मनुष्यता कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?	5
उ.	मनुष्यता कविता के माध्यम से कवि मानवता, एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है। वह मनुष्य को स्वाथ, भिन्नता, वगवाद, जातिवाद, संप्रदायवाद आदि	

	संकीर्णताओं से मुक्त करना चाहता है। वह मनुष्य म उदारता के भाव भरना चाहता है। कवि चाहता है कि हर मनुष्य समस्त संसार म अपनत्व को अनुभूति करे। वह दुखियों, वंचितों और ज़रूरतमंदों के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करने को भी तैयार हो। वह कण, दधीचि, रंतिदेव आदि के अतुल त्याग से प्रेरणा ले। वह अपने मन म करुणा का भाव जगाए। वह अभिमान, लालच और अधीरता का त्याग करे भी सूरत म अलगाव और भिन्नता को हवा नहीं देनी चाहिए।	
	भाव स्पष्ट कीजिए।	
प्र. (1)	सहानुभूति चाहिए, ---------- झुका रहा।	5
उ.	लेखक कहता है – मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी है – सहानुभूति की भावना। यदि मनुष्य म करुणा और सहानुभूति हो तो सारी पृथ्वी उसकी मुट्ठी म हो जाती है। संसार के सब लोग उसका सम्मान करने लगते ह। भगवान बुद्ध ने अपने समय की सारी परंपराओं का विरोध किया। इससे लोग बहुत क्षुब्ध हुए। उन्होंने बुद्ध का हर प्रकार से विरोध किया। परंतु जब बुद्ध ने अपनी करुणा का प्रवाह बहाया तो उनका सारा विरोध बह गया। समाज के सभी वग उनकी करुणा के सामने झुक गए। वे बुद्ध के अनुयायी बन गए।	
2.	रहो न भूल ---------- हाथ ह।	5
उ.	कवि कहता है—मनुष्य को भूलकर भी धन का घमंड नहीं करना चाहिए। धन बहुत तुच्छ उपलब्धि है। कई लोग धन के कारण स्वयं को सुरक्षित और सनाथ मानने की भूल कर बैठते ह। तब उनका चित्त गव से मदहोश हो जाता है। परंतु सच यह है कि इस दुनिया म सभी सनाथ ह। सब पर ईश्वर की कृपा है। कोई प्राणी अनाथ नहीं है। वह भगवान बहुत करुणावान है। वह गरीबों पर दया करता है। उसकी शक्ति अपरंपार है। अतः हम ईश्वर पर भरोसा करना चाहिए, सांसारिक धन-संपत्ति पर नहीं।	
3.	चलो अभिष्ट ---------- हों सभी।	5
उ.	कवि मनुष्य को एकता का पाठ पढ़ाते हुए कहता है – तुम अपने-अपने लक्ष्य के अनुसार जियो। जीवन को प्रसन्नता से जियो। रास्ते म जो भी संकट या बाधाएँ आएँ, उन्ह दूर करते चलो। परंतु एक बात ध्यान म अवश्य रखो। जीवन म कोई भी ऐसा काम न करो जिससे मानव-मानव की आपसी एकता पर आँच आए। आपसी मेलजोल म कमी आए तथा अलगाव बढ़े। हम चाहे किसी भी पंथ, मत यो संप्रदाय म दीक्षित हों, किंतु भूलकर भी एकता के भाव पर चोट न पहुँचाएँ। मानव की मूलभूत एकता म कमी न आने द।	